(1)

Topic, Lecture series No:- 51

Online class
Date - 23/5/2020
Time - 10:30 to 11:30 AM

(1) Loka sangraha.

Dr. Surita Kumari
Depart. of philosophy
B.A. part - II
Paper - (V)
A.N.D College Shahpur
patory, Samastipur.

Ans :- गीता लोकसंग्रह की भावना के कारण ही लोकप्रिय है। लोकधर्मिता के चलते ही गीता का संदेश सार्वभौम महत्व रखता है। यह केवल श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया गया संदेश नहीं है।

अर्जुन के बहाने सारे मानव समुदाय को लोकधर्म का अमूल्य उपदेश दिया गया है। भगवान द्वारा दिए गए उपदेश अर्जुन सरीखे अन्य किंकर्तव्यविमूढ़ लोगों के लिए भी अत्यंत उपयोगी है।

भगवान श्रीकृष्ण का कहना

P.T.O.

है कि कुरुक्षेत्र के युद्ध में कौरव जैसे अधर्मियों एवं पापियों का नाश करना अर्जुन जैसे योद्धा के लिए परम वांछनीय है, किन्तु ममता एवं मोह के वशीभूत वह अपना कर्तव्य भूल रहा है।

कृष्ण उन्हें लोकसंग्रह के नाम पर युद्ध करने की नेक सलाह देते हैं। उनका आदेश है कि अन्याय के लिए भाई को भी दंड देना धर्म होता है। इस उपदेश को सुन अर्जुन ममता मोह के बंधन से मुक्त होकर धनुर्बाण संभालता है और दुष्ट एवं आततायी कौरवों का संहार करता है।

ऐसा लगता है कि गीता के रचयिता महर्षि व्यास ने श्रीकृष्ण एवं अर्जुन के वार्तालाप को ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

P.T.O

में रखते हुए सामान्य अर्थ को प्रस्तुत किया है। कुरुक्षेत्र का मैदान मनुष्य का शरीर है जहाँ दैवी एवं आसुरी प्रवृत्तियों के बीच

सदैव संग्राम छिड़ा रहता है। अर्जुन वहाँ किंकर्तव्यविमूढ़ जीव जैसा है। जो अपने कर्तव्या कर्तव्य का ज्ञान नही रखता है।

भगवान श्रीकृष्ण मनुष्य की आत्मा के प्रतीक है। आत्मा सदैव व्यक्ति को धर्म - अधर्म के संघर्ष में धर्म का पक्ष लेने और अधर्म का विरोध करने की सलाह देती है। इसी प्रकार,

गीता में वर्णित महाभारत का युद्ध प्रत्येक के अंतःकरण में अनवरत रूप से चलता रहता है। कौरव आसुरी अधम प्रवृत्ति के प्रतीक है। और पाँडव दैवी शुभ प्रवृत्ति की घोतक है। मनुष्य के

END.

Scanned with CamScanner